मानव, पशु और पर्यावरण पर लॉकडाउन का प्रभाव

आज दुनिया की रफ़्तार पर जैसे अंकुश सा लग गया हो। जहाँ वो कभी ध्वनि की गती से भी तीव्र चल रही थी, आज वहीं वही ज़िन्दगी चार दीवारों में सिमट कर रह गई है। चाहे फिर सड़कों पर श्तक की गती से भागते वाहन हो या समंदर को छाती चिरतें जाहज और आसमा को फतह करते विमान। आज जहाँ भी देखो मंजर विरान सा है। सड़के सुनी है, आसमा से मुकाबला करने वाला कोई नहीं। आलम कुछ ऐसा हो गया है कि जहां कभी तवील पंक्तियों में रह कर, घंटों इंतजार कर परम परमात्मा के दर्शन प्राप्त होते थे। वही मंदिर अब दिन के उजाले में भी अकेले हैं। बाजार, सिनेमाघर और शॉपिंग मॉल का दृश्य मरुस्थल सा प्रतीत होता है। विद्यालय, महाविद्यालय और अन्य शैक्षणिक स्थल विद्यार्थियों के आवागमन को तरस गये हैं। बच्चों के शोर के बिना मकतब गोरिस्थान में कोई फर्क नहीं रह गया है। हर तरफ बस यही हाल है। आज देश बंद है । कब तक ? ये शायद किसी को मालूम नहीं । एक माहमारी जिसने सम्पूर्ण मानव जाति को घुटनों पर ला दिया है। जहाँ इस महा विनाष्क अशिया ने आज अस्पतालों को श्मशान बना दिया है वही लोगों को घरों में बन्द रहने पर मजबूर कर दिया है। यह महामारी जो चीन से फैल, अब कहाँ जा कर थमेगी इसका कोई अनुमान ही नहीं। आज जो शब्द सभी की जुबान पर है वो करोना एक ऐसा विषाणु, जो द्वितीय विश्व युद्ध से भी अधिक तबाही ले कर जन्मा है।
जैसा कि शास्त्रों में भी कहा गया है-
कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः ।
कालः सुप्तेषु जागति कालो हि दुरतिक्रमः ॥

परन्तु जिस तरह हर सिक्के के दो पहलू होते है, उसी तरह इस महामारी ने एक तरफ जहाँ विनाश का हा हा कार मचाया है वहीं दूसरी तरफ इस धारा को आजादी भी प्रदान की है। आज जहाँ राक्षस रूपी इंसान घरों में बंद है वही घर की चार दीवारों के बाहर प्रकृति खिल उठी है। ये वो मंजर

है जो सुरलय-ए-इखतिया को स्वच्छ अवस अला करता है।
जैसे कहा भी गया है –
इन्सान को तब मालूम हुआ,
कि कितनी सुंदर है प्रकृति,
जब वो खुद पिंजरों में कैद हुआ।

बात अब लॉकडाउन की-
इस लॉकडाउन ने भिन्न-भिन्न प्रकार से भारत ही नहीं पूरे विश्व को प्रभावित किया है। चाहे वो फिर इंसान हो या प्रकृति। हम अगर समय में थोडा पिछे जाये तो लगभग दिसम्बर माह के अंत में चीन में फैली ये महामारी देखते ही देखते मार्च माह के आरम्भ में पूरे विश्व को अपने आगोश में ले लिया । इस महामारी के प्रकोप को देखते हुए कुछ देशों में लॉकडाउन की घोषणा कर दी। भारत में लॉकडाउन २४ मार्च से लागू हुआ। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जनता कर्फ्यू में लोगों की भागीदारी को देखते हुए ये निर्णय लिया।
लॉकडाउन लॉकडाउन लॉकडाउन इतनी बार इस शब्द का जिक्र हो रहा है। पहले हम यही जान लेते हैं, आखिर यह लॉकडाउन है क्या? यह एक ऐसी व्यवस्था है जो आपातकाल में लागू होती है जैसे महामारी, युद्ध इत्यादि। इस व्यवस्था में लोगों को घरों के बाहर जाने की मनाही होती है जैसे चिकित्सा, पुलीस आदि। जो जरूरी क्षेणी के अंतर्गत आते हैं। परन्तु लोग जरूरी आशिया (सामान) जैसे राशन, फल और सब्जी के लिए घर से बाहर आ सकते है। परन्तु सरकार द्वारा तय की गयी समय अवधि अनुरूप और सामाजिक दूरी का पालन करते हुए।
कहते है-
तकदीर से हर शख्स ने पाया हिस्सा,
सबके हिस्से में आपने ही कर्मों की हस्ती आयी।

२४ मार्च २०२० का दिन,
जैसे ही भारत में लॉकडाउन लागू हुआ, वैसे ही कई समस्याओं का भी जन्म हुआ। २६ मार्च २०२०, दिल्ली में काम कर रहे मजदूरों ने

लॉकडाउन के चलते अपनी जन्मभूमि की ओर पलायन आरम्भ कर दिया । कारण था, न रहने को घर न खाने के लिए पैसे। जो मजदूर दिन में कमा कर रात को खाता हो वो बेचारा क्या ही कर सकता है। इन मुश्किलों की घड़ियों में अगर महामारी से बच भी जाता, तो भूख से मर जाता। इस समस्या को देखते हुए भारत सरकार ने १७००० करोड़ के राहत कोष का गठन किया ताकि इस आपदा का सामना कर सके। इस लॉकडाउन ने जहाँ २३.४% लोगों को बेरोजगार कर दिया वहीं देश को ८ लाख करोड़ का आर्थिक नुकसान भी पहुँचाया। पर कहते है न जान है तो जहान है। अगर कोई जिंदा ही नहीं रहेगा तो इस जहान का क्या करेंगे।
शास्त्रों की सुने तो-
किं श्रिया किं कामेन किमीहितैः,
दिनैः कतिपयेरेव कालः सर्वं विकृन्तति।
अर्थात् लक्ष्मी, राज्य, कामना ये सब किस काम के, थोड़े ही समय में काल सभी को नष्ट कर देगा।

इस आपदा के समय में जहाँ कुछ लोग निराश-हताश हैं, वहीं कुछ लोग ऐसे भी है जो स्वयं के विकास में इस समय का सदुपयोग कर रहे हैं। एक सकारात्मक दृष्टिकोण से हर पहलू का हल खोज रहे हैं। इस सकामी सोच के नतीजे आज इस प्रकार दिख रहे है कि लोग घरों से ही कार्यालय के काम को देख रहे हैं। आधुनिक युग जिसे इंटरनेट का युग भी कहा गया है उसी की सहायता से आज हर विद्यार्थी घर बैठे ही अध्यापकों द्वारा ज्ञान अर्जित कर रहा है। आज समा ऐसा हो गया है जैसे इंटरनेट रिवायत बन गया है और सोशल मीडिया क़ा प्रयोग चरम सीमा पर है। लोग अपने हुनर को दिखा कर थक नहीं रहे हैं चाहे वो खाना बनाना हो या गाना गुनगुनाना। इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप्प और फेसबुक पर बहुत सी प्रतियोगिताओं का आयोजन हो रहा है जैसे चित्रकला, संगीत, नृत्य, कविता इत्यादि। और लोग भी इसमें बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे हैं।
वो चले थे हमारे हैसलों को निचा दिखाने,
हमने कहा ठहर अरयाम-ए-गर्दिश,

तुने अभी देखी ही कहां मेरी संयम-ए-वर्दिश।

जहाँ आज लॉकडाउन ने इंसान की आवाम को निस्ते नाबूद कर दिया है। `वहीं कुछ तो है, सुरम्य सा! जो ये तेरा दिदार है।' प्रकृति जो इनायत की तरह लहरा रहा है। ये साफ आसमा दिखाई दे रहा है, नदियों का पानी नीला जान पड़ा है। इसके लिए कोई प्रमाण नहीं देना पड़ रहा, क्योंकि आज उसका दुश्मन वेडियों में कैद है। फैक्ट्रियों पर लगे ताले, वाहनों पर लगी ब्रेक से नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का वातावरण में अनुपात पिछले २ माह में कम हो गया है। मार्च २०१९ से मार्च २०२० में ६०% की गिरावट दर्ज की गयी है। दिल्ली जो देश की धड़कन है वहाँ हवा साँस लेने लायक हो गयी, वायु प्रदूषण का स्तर ५० धन मीटर से १५ धन मीटर आ पहुंचा है। गंगा और यमुना जैसी नदियां जिन्हें वेदों में माँ कहा गया है, उन की सफाई के लिए प्रतिवर्ष ५००० करोड़ रुपये खर्च किये जाते हैं। उनका जल काले से नीला होने लगा है। इससे ये बात भी सच प्रमाणित होती है कि `विनाषक वो विषाणु कहाँ , हम इंसान हैं। जो लालच के नशे से खेल रहे।'
जैसे कहा भी गया है-
निम्नोन्नतं वक्ष्यति को जलानाम् विचित्रभावं मृगपक्षिणां च ।
माधुर्यमिक्षौ कटुतां च निम्बे स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धम् ॥
अर्थात् हम सब प्रकृति की देन है इनमें कोई भी परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए।

पिछले कुछ दिनों में, प्रकृति जैसे आलम विहोर हो उठी है। जिस तरह जान-ए-अदा उर्फ इखतियार से आलम का मेल हुआ है। ऐसा ही दृश्य इटली से सामने आया है। जहाँ नहरों में मच्छलियाँ फिर से दिखाई देने लगी है। डॉल्फिन, वेल्स जो गहरे पानी में चली गयी थी वो समन्द्र किनारे गोते खा रही है। पहाड़ी बकरियों को पिछले कुछ सप्ताह से वेल्स को गलियों मे देखा गया। जापान के नाता पार्क में हिरण का आवागमन देखने को मिल रहा है। यह दृश्य दशकों में पहली दफा है। पर कहते है न खुशियों के साथ गम भी आते हैं। ऐसी ही कुछ दिल देहला देनी वाली

तस्वीर पाकिस्तान से सामने आयी, जहाँ पर एक पेटशॉप में रखे १०० से भी अधिक कुत्ते, बिल्लियों और खरगोश भूख के कारण मारे गए। जो गाय-कुत्ते सड़कों और गलियों मे घूमते थे उन्हें खाना देने वाला आज आकस में है। पार्क में सैलानियों द्वारा दिये जाने वाले खाने पर जिंदा हिरण, बंदर और अन्य जानवर भूख के कारण मर रहे हैं। आज प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है और कब तक? ये कहना अभी मुश्किल है। पर कहते है न समय चाहे कैसा भी हो कट ही जाता है।
धन्यवाद!
खुश रहे ,सुरक्षित रहे।
जय हिंद, जय हिमाचल!

नीतीश गायत्री (V-2016-03-024)
४ वर्ष (पूर्वस्नातक)

Last modified: 12:49 pm